Eureka
Get Inspired. Get Educated

STD : IXth **SUBMISSION DATE : 24.09.2017** **MARKS : 100**

SUB : HINDI **MODEL QUESTION PAPER – 1** **TIME – 3 HOURS.**

प्र.१ क) सूचना के अनुसार निम्नलिखित कृतियाँ परिच्छेद के आधार पर पूर्ण कीजिए। **(०८)**

इस ग्रह का नाम बड़ा विचित्र - सा है। यहाँ के लोग विज्ञान में बहुत आगे बढ़ गए हैं। इनके पास ऐसे यान हैं कि ये एक सौरमंडल से दूसरे तक आसानी से आते - जाते हैं। यहाँ भी लोगों ने रहने के लिए घर बना रखे हैं, कारखाने हैं, बाजार हैं, बस्तियाँ हैं, मोटरें हैं - सभी कुछ है लेकिन हमसे बिलकुल भिन्न। इनके अपने वैज्ञानिक सिध्दांत हैं। इन्हें कई सौरमंडलों और उनके ग्रहों के बारे में जानकारी है। हमारा सौरमंडल इनके सबसे निकट है इसीलिए उन्होंने आसानी से मेरा अपहरण कर लिया।

मेरे अपहरण का कारण जानने से पहले यह जान लें कि ये लोग चिकित्साशास्त्र में बहुत पिछड़े हुए हैं। यह एक ऐसा ग्रह है जहाँ विज्ञान अपनी चरमसीमा को पहुँच चुका है। यहाँ के आदमी अब आदमी नहीं मशीन हो गए हैं। यहाँ का सारा काम मशीनों से ही होता है और इसका नतीजा यह हुआ कि धीरे - धीरे आदमी का महत्व कम होता गया। अब इस पुरे ग्रह में मशीनें ज्यादा और आदमी कम हैं। जो लोग हैं, वे मशीनों के गुलाम हैं। दूसरी ओर यहाँ के लोगों को एक विचित्र तरह का सड़न रोग होने लगा है। शरीर का कोई अंग अचानक सड़ना शुरु हो जाता है और फिर वह आदमी मर जाता है। इस रोग का इलाज इन्हें अब तक नहीं मालूम हो सका है । लेकिन इस रोग का कारण वे मशीनें ही हैं जो इन्हें नाकारा बनाए हुए है। यहाँ के वैज्ञानिकों ने मेरे बारे में सुना। इन्होंने सोचा कि क्यों न मुझे यहाँ बुलाया जाए। तब कोई ऐसी तरकीब सोची जाए कि सड़ा हुआ अंग काटकर उसके स्थान पर दूसरा अंग लगा दिया जाए। बस इसी कारण मेरा अपहरण हुआ है। आज मैं यहाँ बैठकर सोच रहा हूँ की हमारी पृथ्वी पर भी विज्ञान तेजी से उन्नति कर रहा हैं। उद्योंगो के विकास से मशीनों की संख्या बढ़ रही है। मशीनों और कारखानों से वातावरण दूषित हो रहा है। वह सब अगर जारी रहा और ज्यादा मात्रा में हुआ तो पृथ्वी पर भी ऐसे ही दिन आने में देर नहीं लगेगी। आज भी पृथ्वी पर कैंसर, दिल की बीमारियाँ, तनाव के कारण होने वाली बीमारियाँ, ब्लड शुगर आदि उस भविष्य का संकेत हैं। इस ग्रह लोग इस सभी मुसीबतों से गुजर चुके हैं लेकिन इन पर ध्यान नहीं दिए। अब स्थिति यह है कि अगर तुरंत कोई उपाय न किया गया तो शायद यहाँ से इंसानों का नामो - निशान मिट जाएगा। बस यहाँ होंगी ऊँची इमारतें, बड़े - बड़े कारखाने चिमनियाँ और दैत्याकार मशीनें।

अ) संजाल पूर्ण कीजिए ।

१) **(२)**

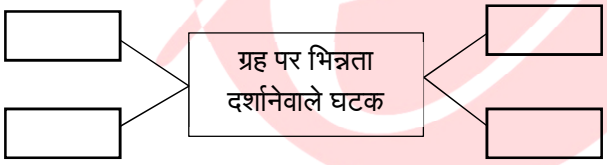

२) **(२)**

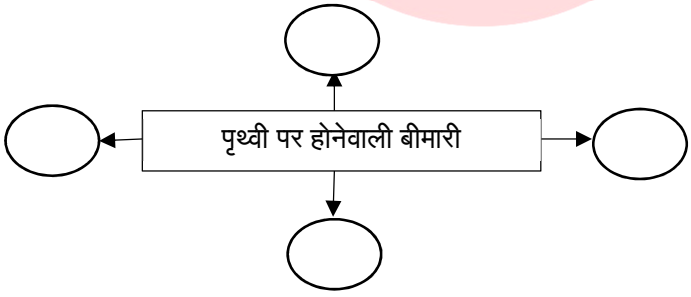

ब) रिक्त स्थानों की पूर्ति करो । **(२)**

१) इस ग्रह का नाम बड़ा ..... हैं।

२) शरीर का कोई अंग अचानक ..... लगता हैं।

क) आप यदि डॉ. भटनागर की जगह होते तो ..... अपने विचार लिखो । **(२)**

प्र.१ ख) सूचना के अनुसार निम्नलिखित कृतियाँ परिच्छेद के आधार पर पूर्ण करो । **(०८)**

अगर थानेदार और पुलिस का सिपाही वहाँ न होते तो अबतक अमरु पर भीड़ टूट पड़ी होती। थानेदार ने आते ही अमरु की कलाई पकड़ ली और पूछा, "बोल, यह बच्चा तूने कहाँ से उठाया है और इसे तू कहाँ ले जा रहा है ? बता कहाँ हैं तेरे और साथी ? आज सबका सुराग लगाकर ही हटूँगा।" अमरु अब तक तो दिल में हँस रहा था मगर थानेदार की धमकियों से कुछ घबरा गया। दबी आवाज में वह थानेदार से बोला - "सरकार, मैंने किसी का बच्चा नहीं उठाया। न मैं बदमाश हूँ। मैं तो एक भले घर का नौकर हूँ। रोटी - चौका करता हूँ और अपने पेट पालता हूँ।"

जो आदमी थानेदार को बुलाकर लाया था, क्रोध में आकर बोला, "क्यों बकता है, बे ! दरोगा जी, ऐसे नहीं यह मानेगा। दो - चार बेंत रसीद कीजिए। " दरोगा ने बगल से निकाल कर बेंत अपने हाथ में ली ही थी कि अमरु नम्रतापूर्वक झुका और बोला, "सरकार, आप जितना चाहें मुझे पीट लें, पहले यह तो देख लें कि इस बोरी में है क्या ? हुक्म हो तो चलिए थाने चलें। " यद्यपि थानेदार इस बात पर राजी हो गए थे पर भीड़ कब मानने वाली थी। लोग चिल्ला उठे, "हरगिज नहीं, ऐसा कभी नहीं होगा। हम सब इस आदमी की बदमाशी के गवाह हैं। मामला कभी दबने नहीं देंगे।" थानेदार डर गए कि उनकी नीयत पर लोगों को शक हो रहा है उन्होंने अमरु से कहा, "अच्छा, बोरी को नीचे रखो। इसका मुँह खोलो। "

अमरु शांतिपूर्वक नीचे बैठ गया और धीरे से उसने बोरी का मुँह खोल दिया। जैसे ही बोरी का मुँह खुला बिल्ली का बिलगुंडा छलाँगें मारता हुआ एक तरफ भाग गया और लोग देखते ही रह गए। थानेदार की भी समझ में न आया कि अब क्या करें ? वह थाने की तरफ मुड़ा और एक ताँगेवाले की पीठ पर बेंत मारते हुए बोला, "जानते नहीं कि रास्तें में ताँगा खड़ा नहीं करना चाहिए।" इस प्रकार अपनी झेंप मिटाने का यत्न करते हुए दरोगा जी चले गए और अमरु हँसता हुआ घर वापस आ गया।

अ) संजाल पूर्ण करो । **(२)**

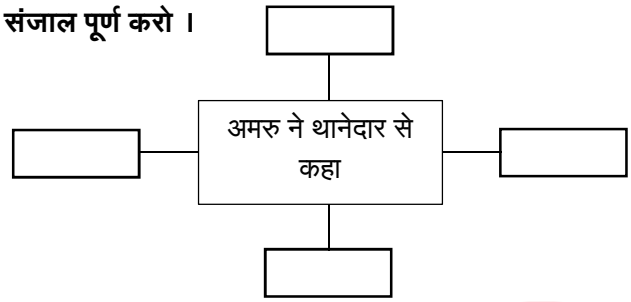

ब) एक वाक्य में उत्तर लिखो : **(४)**

१) थानेदार किसलिए राजी हो गए ।
२) थानेदार के डरने का कारण था।
३) बोरी से बाहर कौन निकला ?
४) थानेदार ने अपना गुस्सा किसपर निकाला ?

क) महँगाई इस विषय में अपने मत ८ से १० पंक्ति में लिखो । **(२)**

प्र.१ ग) सूचना के अनुसार निम्नलिखित कृतियाँ परिच्छेद के आधार पर पूर्ण करो । **(०८)**

अ) संजाल पूर्ण कीजिए : **(२)**

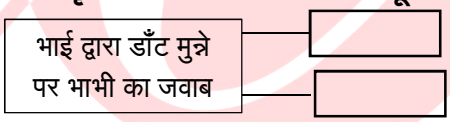

मैंने अच्छा ही किया। कल को महाभारत मचता । रही सही मुहब्बत भी मिट जाती। गलती मेरी भी हैं। वह जवान हो गया था और मैं उसे निपट अनजान बालक ही समझती रही। पर मैं क्या करुँ ? मेरी आँखे तो उसी को देखती हैं, जो कभी स्कूल नहीं जाऊँगा। मुझे सबक याद नहीं होता। उसके भाई क्रुध्द होकर चिल्ला उठते। सबक याद नहीं होता क्या कुलीगिरी करेगा ? मैं कहती, "देखो जी, गाली मत दो। कुलीगीरी करेगा, तुम्हारे आगे हाथ पसारने नहीं आएगा।" वह साधा ठीक लेते। कहते, "तुम इसका सर्वनाश करके रहोगी।" "लेकिन, भगवान की माया कि वही सर्वनाशी बालक आज उनके कान काटता हैं। वह उसके इशारों पर नाचते हैं। सारा व्यापार उसी के कंधो पर ठहरा है।" नंदा इसी तरह सोचती रहती है। आज भी सोच रही है। रात काफी बीत चुकी हैं, परंतु रामदास अभी तक मंदिर से नहीं लौटे। गौरी और शीला दोनो भी गए थे। छोटा बच्चा उसी के पास पलंग पर शांत, निश्चित नींद की परियाँ से खेल रहा था। वह कई क्षण उसे देखती रही। मानो बच्चों की निश्चिंतता ने माँ को बल दिया। वह मुग्ध हो उठी। सहसा तभी किसी ने द्वार खटखटाया। वह उठी और किबाड खोले। देखा सामने देवेन खड़ा है। अकचका कर बोली, "अरे, देवेन ! ..... कैसे आया इस वक्त ? देवेन मुस्कराया। कहा, "अपने पर आने के लिए भी वक्त देखना होता है, यह आज जाना है, भाभी।" नंदा अप्रतिम हुई। कुछ बोली नहीं।

ब) १) विधान पूर्ण करो : **(२)**

१) वह जवान हो गया था और .....
२) कुलीगीरी करेगा या कुछ भी करेगा - .....

२) निम्न कथन सत्य है या असत्य लिखो : **(२)**

१) रामदास मंदिर गये हुए थे।
२) दैवेन ने दरवाजा खटखटाया था।

३) वचन परिवर्तन करो : **(२)**

१) कंधा - ..... २) परी - .....

प्र.२ च) सूचना के अनुसार निम्न कृतियाँ पद्यांश के आधार पर पूर्ण किजिए । **(०६)**

किताबें झाँकती हैं बंद अलमारी के शीशों से,
बड़ी हसरत से तकती हैं।
महीनों अब मुलाकातें नहीं होतीं,
जो शामें उनकी सोहबत में कटा करती थीं
अब अक्सर .....
गुजर जाती हैं 'कंप्युटर के पर्दों पर '
बड़ी बेचैन रहती हैं किताबें .....
उन्हें अब नींद में चलने की आदत हो गई है

अ) आकृति पूर्ण करो।

१) किताबें झाँकती हैं। **(१)**

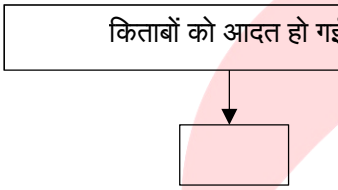

२) किताबों को आदत हो गई **(१)**

ब) सही शब्द चुनकर लिखो : **(२)**

१) बड़ी हसरत / उम्मीद से तकती हैं।

२) इस कविता के कवि गुलजार / दिलदार हैं।

क) पंक्तियों का भावार्थ लिखो : **(२)**

किताबें झाँकती हैं, ... ।

.....कम्पयुटर के पर्दो पर ।

प्र.२ छ) निम्नलिखित २ कविताओं में से किसी एक का पद्य विश्लेषण किजिए । **(०६)**

चादंनी रात / किताबे

१) कवि का नाम **(१)**

२) कविता की विधा **(१)**

३) पसंदीदा पंक्ति **(१)**

४) पसंदीदा होने का कारण **(१)**

५) कविता से प्राप्त संदेश / प्रेरणा **(२)**

प्र.२ ज) सूचना के अनुसार निम्न कृतियाँ पद्यांश के आधार पर पूर्ण किजिए । **(०६)**

साँई इतना दीजिए, जा में कुटुंब समाए।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाए।।
कबीरा ते नर अंध हैं, गुरु को कहते और
हरि रुठे गुरू ठौर है, गुरु रूठे नहिं ठौर
दान दिए धन ना घटे, नदि न घटे नीर।
अपनी आँखों देख लो, यों क्या कहे कबीर।।

अ) आकृति पूर्ण करो ।

१) इतना दीजिए । ☐ **(१)**

२) न भूखा जाए । ☐ **(१)**

३) यों क्या कहे ☐ **(१)**

४) नदि न घटे ☐ **(१)**

५) धन ना घटे ☐ **(१)**

६) अपनी आँखो ☐ **(१)**

प्र.३ ट) सूचना के अनुसार निम्नलिखित कृतियाँ परिच्छेद के आधार पर पूर्ण करो । **(०४)**

परंतु वे स्वभाव से फक्कड़ थे। अच्छा हो या बुरा, खरा हो या खोटा, जिससे एक चिपट उससे जिदंगीभर चिपटे रहो, यह सिध्दांत उन्हें मान्य नहीं था। वे सत्य के जिज्ञासु थे और कोई मोह - ममता उन्हें अपने मार्ग से विचलित नहीं कर सकती थी। वे अपना घर जलाकर हाथ में मुराड़ा लेकर निकल पड़े थे और उसी को साथी बनाने को तैयार थे जो उनके हाथों अपना भी घर जलवा सके -

अ) आकृती पूर्ण किजिए : **(२)**

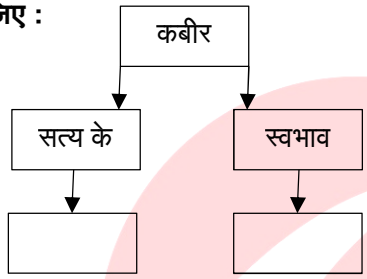

ब) कबीर की जानकारी अपने शब्दों में लिखो । **(२)**

प्र.३ ठ) सूचना के अनुसार निम्न कृतियाँ परिच्छेद के आधार पर पूर्ण किजिए । **(०४)**

रात समय वह मेरे आवे । भोर भये वह घर उठि जावे ।।
यह अचरज है सबसे न्यारा। ऐ सखि साजन ? ना सखि तारा।।
वह आवे तब शादी होय। उस दिन दूजा और न कोय।।
मीठे लागे वाके बोल।। ऐ सखि साजन ? ना सखि ढोल।।
जब माँगू तब जल भरि लावे । मेरे मन की तपन बुझावे।।
मन का भारी तन का छोटा। ऐ सखि साजन ? ना सखि लोटा।।

अ) आकृति पूर्ण करो ।

१) **(२)**

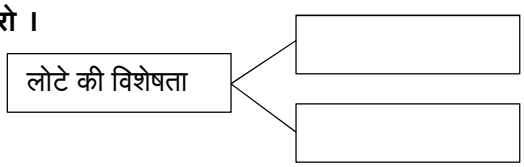

२) **(२)**

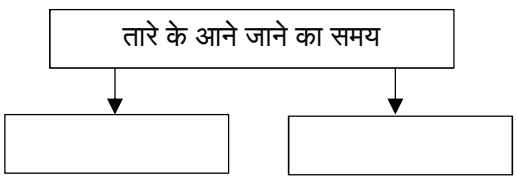

प्र.४ व्याकरण : **(१६)**

१) शब्दभेद पहचानो । (संज्ञा, सर्वनाम) **(२)**

१) मोहन बाजार गया । २) उन्हें अकल आती हैं।

२) अव्यय पहचानो । **(२)**

१) अरे ! क्या मैं झूठ बोल रहा हूँ।

२) मालिक जोर - से बोला ।

३) काल परिवर्तन किजिए । **(२)**

१) घोड़ा थक गया। (सामान्य भविष्यकाल)

२) दोनो चुपचाप चलते हैं। (अपूर्ण भूतकाल)

४) संधि करो : (उदा. सु + आगत = स्वागत) **(२)**

१) सत् + भावना =

२) दुर + लभ =

५) वाक्य के भेद पहचानो : **(२)**

१) वह खेल रहा हैं।

२) राम बाजार गया और सामान ले आया ।

६) मुहावरे का अर्थ व प्रयोग : **(२)**

प्रसन्न होना - अर्थ - वाक्य

७) वाक्य शुध्द करो । **(१)**

गाय घास खाता हैं।

८) सहायक क्रिया पहचानो । **(१)**

लोगों ने घर छोड़ दिया ।

९) प्रेरणार्थक क्रिया । प्रथम व द्वितीय रुप लिखो । **(१)**

लिखना - ....

१०) कारक लिखो । **(१)**

अरे ! तुम कहा चले ।

प्र.५ अ) पत्र - लेखन : (लिफाफा आवश्यक) **(०५)**

होम इन्स्पेक्टर, शहर
विभाग राम नगर, पुणे ।

सागर वेद, ३०२,
योगदर्शन, रामनगर, पुणे।

गणेशोत्सव के समय ऊँची आवाजों में
बजनेवाले रिकॉर्ड के बारे में शिकायत पत्र

अथवा

५ दिन की छुट्टी के लिए विद्यालय के प्राचार्य को पत्र लिखो ।

ब) परिच्छेद पढ़कर पाँच प्रश्न तैयार करो। **(०५)**

गीता जीवन की कला सिखाती है। जब मैं देखता हूँ कि हमारा समाज आज हमारी संस्कृति के मौलिक सिध्दांतो की अवहेलना करता हैं। तब मेरा ह्रदय फटता है। आप चाहे जहाँ जाँए, परंतु संस्कृति के मौलिक सिध्दातों को सदैव साथ रखे, संसार के सारे सुख क्षणभंगुर एवं अस्थाई होते हैं। वास्तविक सुख हमारी आत्म में ही है। चरित्र नष्ट होने से मनुष्य का सब कुछ नष्ट हो जाता हैं। संसार के राज्य पर विजयी होने पर भी आत्मा की हार सबसे बड़ी हार हैं। यही है हमारी संस्कृति का सार जो अभ्यास द्वारा सुगम बनाकर कार्यरुप में परिणत किया जा सकता हैं।

क) कहानी लिखो : (शीर्षक व सीख लिखो) **(०६)**

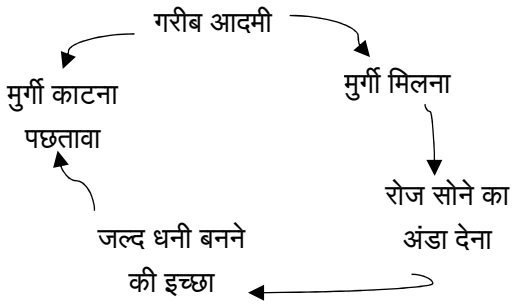

प्र.६ अ) १) निम्नलिखित प्रसंग पर लगभग ६० से ८० शब्दों में अपने विचार लिखो । **(०५)**

मेरी बहन परीक्षा के लिए घर से निकल रही थी, तभी मम्मी को छींक आ गई। दादी ने इसे अपशकुन मानते हुए बहन को घर से तुरंत निकलने के लिए रोक दिया। इस कारण उसकी बस छूट गई और पापा को उसे कॉलेज छोड़ना पड़ा।

अथवा

२) अपने विद्यालय में मनाए गए 'स्वतंत्रता दिवस ' का वृत्तांत लिखो ।

(वृत्तांत में काल घटना व अतिथि का उल्लेख आवश्यक)

ब) धुलाई के लिए प्रयोग किए जाने वाले साबुन का विज्ञापन तैयार करो । **(०५)**

क) किसी एक विषय पर निबंध लिखो। **(०८)**

१) मेरा प्रिय त्योहार २) वृक्ष लगाओ, देश बचाओ।

*** BEST OF LUCK ***

Eureka
Get Inspired. Get Educated

STD : IXth **SUBMISSION DATE : 24.09.2017** **MARKS : 100**

SUB : HINDI **MODEL QUESTION PAPER – 1 SOLUTION** **TIME – 3 HOURS.**

प्र.१ क) सूचना के अनुसार निम्नलिखित कृतियाँ परिच्छेद के आधार पर पूर्ण कीजिए। **(०८)**

अ) संजाल पूर्ण कीजिए ।

१) **(२)**

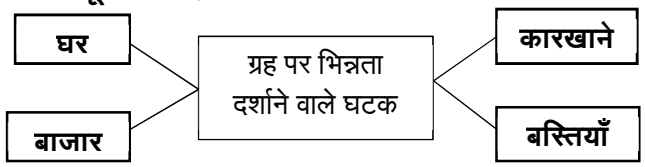

२) **(२)**

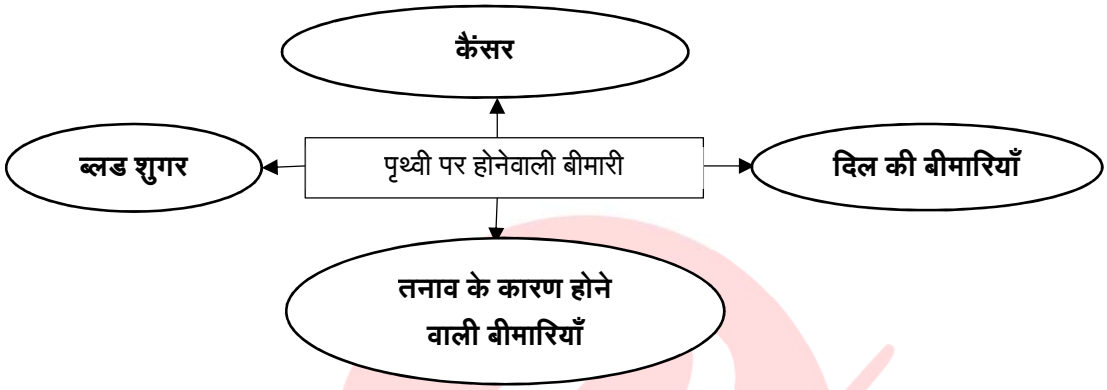

ब) रिक्त स्थानों की पूर्ति करो । **(२)**

उत्तर : १) इस ग्रह का नाम बड़ा **विचित्र सा** हैं।

२) शरीर का कोई अंग अचानक **सड़ने** लगता हैं।

क) आप यदि डॉ. भटनागर की जगह होते तो ..... अपने विचार लिखो । **(२)**

उत्तर : यदि मैं डॉक्टर भटनागर की जगह होता तो मैं भी उनकी तरह ग्रहवासियों के बीमारियों को ठीक करने के उपाय बताता। साथ - साथ उन्हें यह भी समझाता कि उनकी इस दशा का कारण वहाँ की अतिविकसित मशीनों का अत्याधिक उपयोग ही है। मशीनों ने उन्हें गुलाम बना दिया है। सभी काम मशीनों से होते है । फलस्वरुप आदमी की शारीरिक कार्यक्षमता न के बराबर हो गई।

मैं उन्हें शारीरिक श्रम की उपयोगिता बताता जिससे वे विभिन्न बीमारियों से बच सकें। हर मानव सुखमय जीवन व्यतीत करे।

प्र.१ ख) सूचना के अनुसार निम्नलिखित कृतियाँ परिच्छेद के आधार पर पूर्ण करो । **(०८)**

अ) संजाल पूर्ण करो । **(२)**

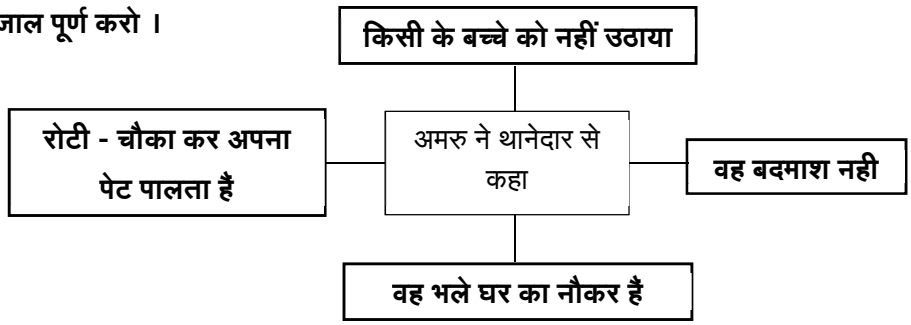

ब) एक वाक्य में उत्तर लिखो : **(४)**

१) थानेदार किसलिए राजी हो गए ।

उत्तर : थानेदार बोरी में क्या है यह देखने के लिए राजी हो गए ।

२) थानेदार के डरने का कारण था।

उत्तर : कारण लोगों को उसकी नीयत पर शक हो रहा था।

३) बोरी से बाहर कौन निकला ?

उत्तर : बिल्ली का बिलंगुडा निकला।

४) थानेदार ने अपना गुस्सा किसपर निकाला ?

उत्तर : थानेदार ने अपना गुस्सा एक ताँगेवालके पर निकाला।

क) महँगाई इस विषय में अपने मत ८ से १० पंक्ति में लिखो । **(२)**

उत्तर : आज का युग विज्ञान का युग है। मानव विज्ञान के क्षेत्र में बहुत प्रगति कर चुका है। नए – नए वैज्ञानिक अविष्कारों ने मानव को सुविधाभोगी बना दिया है। सुविधाभोगी होने के कारण खर्च बढ़ गया है। आज आवश्यक वस्तुओं के दाम आकाश चूमने लगे हैं।

मानव समाज आज वर्गों में बँट गया है। महँगाई के कारण आज गरीब और गरीब बनता जा रहा है। सुविधाभोगी वर्ग ऐश्वर्य का जीवन जी रहा है। गरीब व्यक्ती के लिए दो वक्त की रोटी के लाले पड़ गए हैं। इस महँगाई की मार से सबसे ज्यादा मध्यमवर्ग ही प्रभावित होता है। उसे अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए हर चीज पर ध्यान देना पड़ता है।

हमारी सरकार में बैठे लोगों के खर्च इतने बढ़े हुए हैं कि वे पैसे को कोई महत्व नहीं देते। चाहे नेता हों या सरकारी अधिकारी उनमें कामचोरी ज्यादा है, भ्रष्टाचार ज्यादा है, कर्तव्यनिष्ठा बिल्कुल नहीं है। उनका जीवन आलिशान बंगलों तथा विदेशी कारों में घूमकर व्यतीत हो रहा है। उन्हें मध्यमवर्ग और गरीब की कोई चिंता ही नही है।

महँगाई बढ़ने का एक कारण उपयुक्त उत्पादन का अभाव है। जो सूखा, बाढ़ या भूकंप आदि कारणों से फसलों को हानि पहुँचती हैं। इसी कमी के कारण बाजार में अनाज, फलों और सब्जियों के दाम बढ़ जाते हैं। युद्ध, हड़ताल, दंगे आदि कारणों से भी दाम में वृद्धि हो जाते है। सबसे बड़ा कारण जनसंख्या की वृद्धि है। क्योंकि जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में वस्तुओं का उत्पादन नहीं होता तब महँगाई में वृद्धि ज्यादा हो जाती है। महँगाई के कारण लोगो का जीवन निर्वाह बड़ा कठिन हो जाता है। मध्यम और गरीब वर्ग पर इसका सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। गरीबों के बच्चे तो इस महँगाई के कारण पढ़ाई बीच में छोड़ देते है। लोग अपनी बेटी की समय पर शादी नहीं कर पाते।

महँगाई पर नियंत्रण बहुत आवश्यक है। सरकार, व्यापारी और जनता समझदारी से काम करे तो इस समस्या पर बहुत कुछ मात्रा में काबू पाया जा सकता है। सरकार को खर्चे कम करके किसानों की सहयता करनी चाहिए, उन्हें शिक्षित करना चाहिए तथा उत्पादन और जनसंख्या वृद्धि का अनुपात बनाए रकने का प्रयास करना चाहिए। लोगों को जीवन में संयम और सादगी लानी चाहिए नहीं तो महँगाई एक विकट समस्या बनी रहेगी।

प्र.१ ग) सूचना के अनुसार निम्नलिखित कृतियाँ परिच्छेद के आधार पर पूर्ण करो । **(०८)**

अ) संजाल पूर्ण कीजिए : **(२)**

भाई द्वारा डाँट मुन्ने पर भाभी का जवाब
- **क़ुलिगिरी करेगा**
- **तुम्हारे आगे हाथ पसारने नहीं आएगा।**

ब) १) विधान पूर्ण करो : **(२)**

१) वह जवान हो गया था और **मैं उसे निपट अनजान बालक ही समझती रही।**

२) कुलीगीरी करेगा या कुछ भी करेगा - **"तुम्हारे आगे हाथ पसारने नहीं आएगा।"**

२) निम्न कथन सत्य है या असत्य लिखो : **(२)**

१) रामदास मंदिर गये हुए थे। - **सत्य**

२) दैवेन ने दरवाजा खटखटाया था। - **सत्य**

३) वचन परिवर्तन करो : **(२)**

१) कंधा - **कंधो** २) परी - **परियाँ**

प्र.२ च) सूचना के अनुसार निम्न कृतियाँ पद्यांश के आधार पर पूर्ण किजिए । **(०६)**

अ) आकृति पूर्ण करो।

१) किताबें झाँकती हैं। → **बंद अलमारी के शीशों से** **(१)**

२) किताबों को आदत हो गई → **चलने की** **(१)**

ब) सही शब्द चुनकर लिखो : **(२)**

उत्तर : १) बड़ी **<u>हसरत</u>** से तकती हैं।

२) इस कविता के कवि **<u>गुलजार</u>** हैं।

क) पंक्तियों का भावार्थ लिखो : **(२)**

किताबें झाँकती हैं, ... ।

.....कम्पयुटर के पर्दो पर ।

उत्तर : प्रस्तुत पंक्तियों में कवि 'गुलजार ' ने वर्तमान परिस्थिति में पुस्तकों की दयनीय दशा का वर्णन किया है। कवि कहते हैं किताबें केवल बंद अलमारी की शोभा बनकर रह गई हैं। वे लोगों की ओर उम्मीद भरी दृष्टि से देखती हैं कि शायद कोई उनका उपयोग करे। किंतु लोगों के पास आज उनकी ओर देखने का वक्त ही नहीं हैं। जब विज्ञान के संगणक (कंप्युटर) और मोबाइल जैसे यंत्रों का अविष्कार नहीं किया था और लोगों का जीवन आज के समान भाग - दौड़ भरा नहीं था, तब वे अपनी खाली शामें पुस्तकों के साथ ही गुजारते थे। लेकिन आज लोगों का पूरा दिन कंप्यूटर के पर्दों पर काम करने में ही बीत जाता है। वे अपने इन ज्ञान - विज्ञान के भंडार की ओर दृष्टि ही नहीं डाल पाते।

प्र.२ छ) निम्नलिखित २ कविताओं में से किसी एक का पद्य विश्लेषण किजिए । **(०६)**

किताबे / चादंनी रात

१) कवि का नाम **(१)**

२) कविता की विधा **(१)**

३) पसंदीदा पंक्ति **(१)**

४) पसंदीदा होने का कारण **(१)**

५) कविता से प्राप्त संदेश / प्रेरणा **(२)**

उत्तर : किताबें

१) कवि का नाम - गुलजार (संपूरन सिंह कालरा)।

२) कविता की विधा - नई कविता ।

३) पसंदीदा पंक्ति

किताबें झाँकती हैं बंद
अलमारी के शीशों से,
बड़ी हसरत से तकती हैं।

४) पसंदीदा होने का कारण :

उपरोक्त पंक्तियाँ मेरी पसंदीदा है क्योंकि आज किताबे कोई पढ़ता नहीं इस बात का बड़ा दुख है। अलमसि में किताबें बंद हैं। और दु:ख है।

५) प्रेरणा / संदेश :

प्रस्तुत कविता में गुलजार जी ने पुस्तकें पढ़ने का सुख, कंप्यूटर के कारण पुस्तकों के प्रति अरुचि, पुस्तकों और मनुष्यों के बीच बढ़ती दूरी का वर्णन किया गया है। पुस्तको को इसके कारण बहुत दु:ख हो रहा है।

चांदनी रात

१) कवि का नाम - मैथिलिशरण गुप्त।

२) कविता की विधा - खंडकाव्य ।

३) पसंदीदा पंक्ति

चारु चंद्र की चंचल किरणें
खेल रही हैं जल - थल में ।

४) पसंदीदा पंक्ति होने का कारण :

प्रस्तुत पंक्तियाँ मैथिलीशरण गुप्त द्वारा लिखित है। कवि ने सुंदर चंद्रमा और किरणो का वर्णन किया है। तथा वह किरणे जल - थल में खेल रही हैं। इसलिए उपरोक्त पंक्ति मुझे पसंद है।

५) संदेश : प्रस्तुत कविता खंडकाव्य विधा से लि गई है। इस कविता में प्रकृति की छटा का सुंदर रुप बड़े ही माधुर्य के साथ प्रस्तुत किया गया है। चाँदनी रात का मनोहरी वर्णन सुंदर शब्दों में चित्रित किया हैं।

प्र.२ ज) सूचना के अनुसार निम्न कृतियाँ पद्यांश के आधार पर पूर्ण किजिए । **(०६)**

अ) आकृति पूर्ण करो ।

उत्तर : १) **साँई** इतना दीजिए । **(१)**

२) **साधु** न भूखा जाए । **(१)**

३) यों क्या **कहे कबीर** । **(१)**

४) नदि न **घटे नीर** । **(१)**

५) धन ना घटे **दान दिए** **(१)**

६) अपनी आँखो **देख लो** । **(१)**

प्र.३ ट) सूचना के अनुसार निम्नलिखित कृतियाँ परिच्छेद के आधार पर पूर्ण करो । **(०४)**

अ) आकृती पूर्ण किजिए : **(२)**

उत्तर :

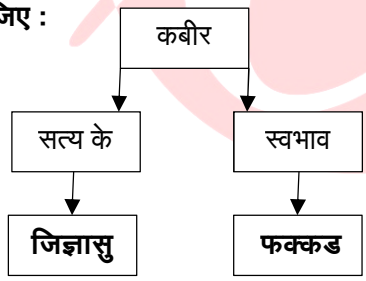

ब) कबीर की जानकारी अपने शब्दों में लिखो । **(२)**

उत्तर : कबीर के जन्म और मृत्यु के बारे में अनेक किवदंतियाँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि काशी में उनका जन्म हुआ था।

भक्तिकालीन निर्गुण भक्तिधारा के प्रमुख कवि कबीर निडर संत थे। राम और रहीम की एकरुपता में विश्वास रखने वाले कबीर ने हर तरह से पाखंड, भेदभाव और कर्मकांड का खंडन किया। आपने अपने काव्य में धार्मिक और सामाजिक भेदभाव से मुक्त मनुष्य की कल्पना की हैं।

प्र.३ ठ) सूचना के अनुसार निम्न कृतियाँ परिच्छेद के आधार पर पूर्ण किजिए । **(०४)**

अ) आकृति पूर्ण करो ।

१) 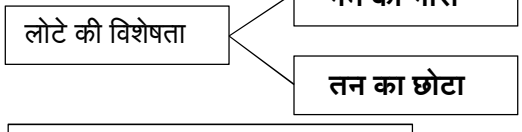

(२)

२) 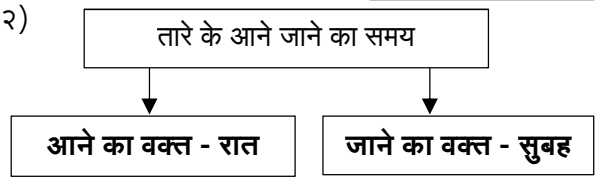

(२)

प्र.४ व्याकरण : **(१६)**

१) शब्दभेद पहचानो । (संज्ञा, सर्वनाम) **(२)**

१) मोहन बाजार गया । २) उन्हें अकल आती हैं।

उत्तर : **१) मोहन -** संज्ञा । **२) उन्हें -** सर्वनाम ।

२) अव्यय पहचानो । **(२)**

१) अरे ! क्या मैं झूठ बोल रहा हूँ।

उत्तर : **अरे** - विस्मयादिबोधक अव्यय ।

२) मालिक जोर - से बोला ।

उत्तर : **जोर - से** - क्रियाविशेषण अव्यय ।

३) काल परिवर्तन किजिए । **(२)**

१) घोड़ा थक गया। (सामान्य भविष्यकाल)

उत्तर : घोड़ा थक **जाएगा।**

२) दोनो चुपचाप चलते हैं। (अपूर्ण भूतकाल)

उत्तर : दोनो चुपचाप **चल रहे थे।**

४) संधि करो : (उदा. सु + आगत = स्वागत) **(२)**

१) सत् + भावना =

उत्तर : **सद्भावना ।**

२) दुर + लभ =

उत्तर : **दुर्लभ ।**

५) वाक्य के भेद पहचानो : **(२)**

१) वह खेल रहा हैं।

उत्तर : **साधारण वाक्य ।**

२) राम बाजार गया और सामान ले आया ।

उत्तर : **संयुक्त वाक्य ।**

६) मुहावरे का अर्थ व प्रयोग : **(२)**

प्रसन्न होना - अर्थ - वाक्य

उत्तर : प्रसन्न होना - खुश होना ।

वाक्य : राजू के परीक्षा में अच्छे अंक आने पर वह प्रसन्न हो गया ।

७) वाक्य शुध्द करो । **(१)**

गाय घास खाता हैं।

उत्तर : गाय घास **खाती हैं**।

८) सहायक क्रिया पहचानो । **(१)**

लोगों ने घर छोड़ दिया ।

उत्तर : लोगों ने घर छोड़ देना।

९) प्रेरणार्थक क्रिया । प्रथम व द्वितीय रुप लिखो । **(१)**

लिखना - ....

उत्तर : लिखना - **लिखाना लिखवाना ।**

१०) कारक लिखो । **(१)**

अरे ! तुम कहा चले ।

उत्तर : अरे - **संबोधनकारक ।**

प्र.५ अ) पत्र - लेखन : (लिफाफा आवश्यक) **(०५)**

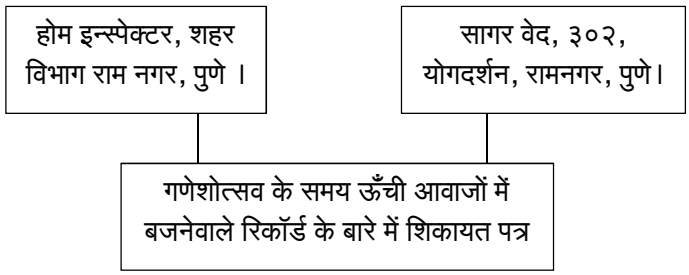

उत्तर :

सागर वेद
३०२, योगदर्शन,
रामनगर,
पुणे,
२४ नवंबर, २०१६

सेवा में,
होम इन्स्पेक्टर,
शहर विभाग राम नगर,
पुणे

विषय : गणेशोत्सव में ऊँची आवाज में बजनेवाले रेकार्डों से होने वाली परेशानी की ओर ध्यान आकर्षित करना ।

आदरणीय महोदय,

मैं बावलावाड़ी विभाग का निवासी हूँ । आजकल गणेशोत्सव के दिन हैं । जहाँ देखो वहीं दिन – रात रेकार्ड बज रहे हैं। इन रेकार्डो की ध्वनि इतनी तेज रहती है कि कानों को सहन नहीं होती । इसके अतिरिक्त आजकाल हम विद्यार्थियों की परीक्षाएँ भी चल रही हैं। रेकार्डों की तेज आवाज के कारण हमारी पढ़ाई में बड़ी बाधा पड़ती है।

सार्वजनिक उत्सवों में रेकार्ड बजाना बुरा नहीं है, लेकिन ध्वनिवर्धक यंत्र पर नियंत्रण जरुर होना चाहिए । उनके बजने का समय भी मर्यादित होना चाहिए। उत्सव की चहल-पहल से किसी के काम में दखल नही पहुँचना चाहिए । इसलिए आपसे प्रार्थना है कि आप दिन रात में अमुक समय के लिए ही रेकार्ड बजाने की अनुमति दें और ध्वनिवर्धकों को भी नियंत्रित कराने की कृपा करें। इससे विद्यार्थी पढ़ने में ध्यान दे सकेंगे और लोगों के आराम में भी बाधा नहीं पड़ेगी ।

मुझे उम्मीद है कि आप विद्यार्थियों और लोगों की कठिनाई समझकर इस बारे में जरुरी कारवाई अवश्य करेंगे।

कष्ट के लिए क्षमा चाहता हूँ।

आपका विनीत,
मधुकर गावड

अथवा

५ दिन की छुट्टी के लिए विद्यालय के प्राचार्य को पत्र लिखो ।

उत्तर :

अशोक सरदेशमुख
५, लक्ष्मी चौक,
सांगली
२४ नवंबर, २०१६

सेवा में,
प्रध्यानाध्यापक जी,
पटवर्धन हाईस्कूल,
सांगली

विषय : छुट्टी के लिए आवेदन - पत्र

आदरणीय महोदय,

सविनय निवेदन है कि दिनांक २८ नवंबर २०१२ को मेरे बड़े भाई का शुभविवाद होना निश्चित हुआ है। विवाहकार्य के लिए मुझे परिवार के साथ पुणे जाना होगा, क्योंकि सारी व्यवस्था वहीं की गई है। इसलिए मैं दिनांक २५ नवंबर से ३० नवंबर तक विद्यालय में नही आ पाऊँगा । इन पाँच दिनों की छुट्टी की स्वीकृति देने की कृपा करें।

इन दिनों में होने वाली पढ़ाई की क्षति मैं मित्रों के सहयोग से पूरी कर लूँगा।

धन्यवाद ।

आपका आज्ञाकारी छात्र,
अशोक सरदेशमुख
कक्षा १० (अ), क्रमांक ४

ब) परिच्छेद पढ़कर पाँच प्रश्न तैयार करो। **(०५)**

गीता जीवन की कला सिखाती है। जब मैं देखता हूँ कि हमारा समाज आज हमारी संस्कृति के मौलिक सिध्दांतो की अवहेलना करता हैं। तब मेरा ह्रदय फटता है। आप चाहे जहाँ जाँए, परंतु संस्कृति के मौलिक सिध्दातों को सदैव साथ रखे, संसार के सारे सुख क्षणभंगुर एवं अस्थाई होते हैं। वास्तविक सुख हमारी आत्म में ही है। चरित्र नष्ट होने से मनुष्य का सब कुछ नष्ट हो जाता हैं। संसार के राज्य पर विजयी होने पर भी आत्मा की हार सबसे बड़ी हार हैं। यही है हमारी संस्कृति का सार जो अभ्यास द्वारा सुगम बनाकर कार्यरुप में परिणत किया जा सकता हैं।

प्रश्न :

१) गीता क्या सिखाती है ?
२) संसार के सारे सुख कैसे होते हैं ?
३) वास्तविक सुख कहाँ है ?
४) ह्रदय कब फटता है ?
५) कार्यरुप में परिणत किसे किया जा सकता हैं ?

क) कहानी लिखो : (शीर्षक व सीख लिखो) **(०६)**

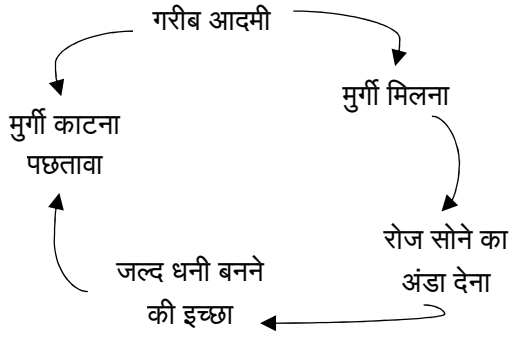

उत्तर :

लालच का फल

सुंदरगढ़ नामक गाँव में एक गरीब आदमी रहता था। दिनभर मेहनत करने के बाद जो कुछ मिलता उसी से वह अपने परिवार का गुजारा करता । व्यापार करने की पूँजी और अकल उसके पास नहीं थी। पर एक दिन उसके भाग्य खुल गये। उसे एक मुर्गी मिली। गरीब आदमी खुशी - खुशी उसे अपने घर ले आया। वह मुर्गी रोज सोने का एक अंड़ा देती थी। उससे कुछ दिनों में वह गरीब आदमी अमीर बन गया।

एक दिन आदमी ने सोचा, "यह मुर्घी रोज सोने का एक अंड़ा देती है। इसके पेट में बहुत से अंड़े होंगे। इसे चीरकर सारे अंड़े एक साथ निकाल लूँ, तो रोज - रोज की यह खटपट दूर हो जाए और मैं एक ही दिन में करोड़पति बन जाऊँ।"

फिर वह खुशी से चाकू लाया। बिना अधिक सोच - विचार किए उसने मुर्घी का पेट चीर डाला। मुर्गी के शरीर से रक्त की धारा बहने लगी। वह एक बार चीखी और मर गई। लालची आदमी सिर पीटकर रोने लगा। पहले रोज एक अंड़ा मिलता था। वह क्या कम था। हाय ! मैंने लालच में पड़कर सब अंड़े गँवा दिए। वह बहुत पछताया।

सीख : सचमुच, लालच बुरी बला है। लोभी और लालची का सर्वनाश होता है।

प्र.६ अ) १) निम्नलिखित प्रसंग पर लगभग ६० से ८० शब्दों में अपने विचार लिखो । **(०५)**

मेरी बहन परीक्षा के लिए घर से निकल रही थी, तभी मम्मी को छींक आ गई। दादी ने इसे अपशकुन मानते हुए बहन को घर से तुरंत निकलने के लिए रोक दिया। इस कारण उसकी बस छूट गई और पापा को उसे कॉलेज छोड़ना पड़ा।

उत्तर : मेरी बहन परीक्षा के लिए घर से निकल रही थी, तभी मम्मी को छींक आ गई। दादी ने इसे अपशकुन मानते हुए बहन को घर से तुरंत निकलने के लिए रोक दिया। इस कारण उसकी बस छूट गई और पापा को उसे कॉलेज छोडना पड़ा। मैंने दादी को समझाते हुए ये कहा कि हम आज एक वैज्ञानिक युग में जी रहे हैं। जो चीजें वैज्ञानिक रुप से तर्कसंगत नहीं है, वे अंधविश्वास कहलाती हैं। छीकने से कोई बुरा नहीं होता, तो अपशकुन कैसा ? जब कुछ बुरा हो जाए तो वह अपशकुन नहीं होता बल्कि ऐसा हमारी गलती से अथवा किसी कमी के कारण होता है । मम्मी को उस समय सर्दी हुई थी और उनको छींक आ रही थी। मम्मी को जितनी तकलीफ बीमारी से नहीं हुई, उससे ज्यादा बुरा दादी के अंधविश्वास से हुआ। बहन और पापा दोनों को अपनी - अपनी जगह पहुँचने में देर हो गई। हमारे समाज में आज भी कोई अंधविश्वास व्याप्त हैं, जिनमें से एक है काली बिल्ली का रास्ता काटना । बिल्लियाँ एक घरेलू प्राणी हैं। वे इधर - उधर घूमती रहती हैं। अगर वे सामने पड़ गई, तो उसमें कैसा अपशकुन ? इसी तरह कई प्रकार की बीमारियों को भी लोग बुरे कर्मों का फल या दैवी प्रकोप मानते हैं और डॉक्टर के पास इलाज करवाने नहीं जाते। इसके अलावा समाज के कई तबकों में अनेक कुप्रथाएँ आज भी चल रही हैं। इनके अंधविश्वास के कारण लोग मृत्यु के शिकार बन जाते हैं, इसलिए हमें चाहिए कि हम लोगों में जन - जागृति फैलाएँ। उन्हें वैज्ञानिक तर्कों के आधार पर इन अंधविश्वासों को छोड़ने के लिए प्रेरित करें।

अथवा

२) अपने विद्यालय में मनाए गए 'स्वतंत्रता दिवस ' का वृत्तांत लिखो ।

(वृत्तांत में काल घटना व अतिथि का उल्लेख आवश्यक)

उत्तर : **स्वतंत्रता दिवस का शानदार समारोह**

अंधेरी, मुंबई - आज प्रात:कार ठीक ७.१५ बजे स्थानीय महाराष्ट्र विद्यालय में प्रतिवर्ष की भाँति, इस वर्ष भी भारतीय प्रजासत्ताक स्वतंत्रता दिवस समारोह विद्यालय के प्रांगण में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस समारोह की अध्यक्षता इलाके के समाजसेवक अण्णा हजारे ने की। इस अवसर अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

समारोह के प्रारंभ में अण्णा हजारे के कर कमलों द्वारा राष्ट्रध्वज फहराया गया तथा झंडा गीत गाया गया। तपश्चात विद्यालय के एन. सी. सी. के छात्रों ने ड्रील कवायत पेश किए। दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने अमर शहीद नाटक का मंचन किया। अपने अध्ययन भाषण में हजारे जी ने भारत की आजादी, एकता और अखंडता को कायम करने की उम्मीद की।

बाद में विद्यालय के वरिष्ठ शिक्षक अनिल जी ने अध्यक्ष महोदय एवं उपस्थित मेहमानों के प्रति आभार प्रकट किया। राष्ट्रगीत के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। प्रस्थान करते समय सभी विद्यार्थियों को मिष्ठान बाँटा गया। मेहमानों को जलपान कराया गया। इस तरह आनंद और उत्साह के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

ब) धुलाई के लिए प्रयोग किए जाने वाले साबुन का विज्ञापन तैयार करो । (०५)

उत्तर:

चकाचौंध

जैसा नाम वैसा काम

- कपड़े कैसे भी हों, चकाचौंध साबुन से धोते ही आप हो जाते हैं चकाचौंध ।
- कपड़ों की मैल हटाए और पीलापन दूर करे ।
  कपड़ों को झकाझक बनाए ।

आप भी चकाचौंध अपनाएँ।

छह साबुन खरीदने पर एक साबुन मुफ्त ।

क) किसी एक विषय पर निबंध लिखो। (०८)

१) मेरा प्रिय त्योहार

रुपरेखा: (१) प्रिय त्योहार का परिचय (२) मनाने की विधि (३) नया दृष्टिकोण (४) ऐतिहासिक महत्व (५) प्रिय होने का कारण

होली, दीवाली, रक्षाबंधन, दशहरा आदि हमारे मुख्य त्योहार हैं। इन त्योहारों में रक्षाबंधन का त्योहार मुझे सबसे अधिक प्रिय है। यह त्योहार भाई - बहन के शुद्ध और निःस्वार्थ प्रेम का प्रतीक है। भाई - बहन के पवित्र प्रेम के साथ ही इसमें जो सादगी है, वह दूसरे किसी त्योहार में नहीं है। दिवाली में दीयों की रोशनी होती है। होली में रंग और गुलाला की धूम मच जाती है। दशहरे के दिन भी बड़ी धूमधाम होती है, लेकिन रक्षाबंधन का त्योहार मनानो के लिए पवित्र हार्दिक प्रेम के सिवा अन्य किसी भी चीज की जरुरत नही पड़ती।

राखी का त्योहार श्रावणी पूर्णिमा को मनाया जाता है। उस समय मौसम बहुत सुहावना होता है। आकाश में बिजली मानो अपने भाई - बादलों को राखी बाँधने के लिए अपनी अधीरता प्रकट करती दिखाई देती है। यह त्योहार हर भाई को अपनी बहन के प्रति अपने कर्तव्य की याद दिलाता है। बहन भाई को प्यार से राखी बाँधती है और भाई मन – ही मन अपनी बहन की रक्षा की जिम्मेदारी स्वीकार करता है। राखी से भाई - बहन के बीच स्नेह का पवित्र बंधन और भी मजबूत हो जाता है।

अभी तक लोग यही मानते आए हैं कि अबला होने के नाते नारी राखी बाँधकर अपनी रक्षा का भार भाई पर डालती है। किंतु वास्तव में वह भाई को केवल अपनी रक्षा का ही नहीं, बल्कि सारी नारीजाति की रक्षा का भार सौंपती है. राखी बाँधकर वह अपने भाई को शक्ति और साहस का मंत्र देती है और उसके कल्याण की कामना करती है। इसलिए ऐसे पवित्र त्योहार को उत्साह और आनंद से मनाना चाहिए।

चित्तौड की राजमाता कर्मवती ने मुगल बादशाह हुमायूँ को राखी भेजकर उसे अपन भाई बनाया था। और वह भी संकट के समय बहन कर्मवती की रक्षा के लिए चित्तौड़ पहुँच गया था। हुमायूँ ने गुजरात के बादशाह बहादुरशाह के साथ युद्ध करने का निश्चय किया। यह राखी की ही शक्ति थी कि हुमायूँ ने खुद मुसलमान होकर भी एक हिंदू नारी के सम्मान की रक्षा के लिए एक मुसलमान बादशाह से युद्ध किया।

मेरी इकलौती बहन मुझसे दूर रहती है। इसलिए रक्षाबंधन के दिन वह जब हमारे घर आती है, तब मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहता। बचपन की स्मृतियाँ उमड़ पड़ती हैं और खुशी के मारे आँसू ढुलक पड़ते हैं। बहन की ममता , स्नेह और मंगल भावनाएँ मुझे नवजीवन प्रदान करती हैं। मुझे अनोखे आनंद का अनुभव होता है। रक्षाबंधन का त्योहार भैया, मेरे राखी के बंधन को न भुलाना कहने वाली बहन की याद हमेशा तरोताजा बनाए रखता है। इसलिए यह मेरा प्रिय त्योहार है।

२) वृक्ष लगाओ, देश बचाओ।

वृक्ष और मानव का संबंध बहुत पुराना है। एक समय था जब मनुष्य वनों में रहता था। वृक्षों पर वह अपने घर बनाता था ! कंद - मूल और फल उसके आहार थे। वेदों ओर पुराणों के समय भारत के ऋषि, मुनि और तपस्वी वनों में ही रहते थे। आरण्यक और उपनिषद ग्रंथों की रचना वनों में ही हुई। इस तरह भारतीय संस्कृति का जन्म वनों में ही हुआ और वर्षो तक वृक्ष हमारे संरक्षक और विश्वसनीय मित्र की भूमिका निभाते रहे।

परंतु बाद में मनुष्य ने वनों और वृक्षों की उपेक्षा करना शुरु किया। वनों की अंधाधुंध कटाई होने लगी । इसके कारण बड़े - बड़े जंगल साफ हो गए। वनों की सघनता में कमी आ गई। हरियाली वीरानी में बदलने लगी।

कुछ ही वर्षो में मनुष्य के इस अज्ञान के परिणाम सामने आने लगे। वर्षा की मात्रा में कमी आ गई। दुनिया भर में अकाल पड़ने लगा। कृषि की ओर लोगों की रुचि में कमी आ गई। अन्न का उत्पादन घटने लगा। नदियों में भयंकर बाढ़ आने लगी। वनों के कारण शुध्द रहने वाला वायुमंडल प्रदूषित होने लगा। आज जिसे हर्म ग्लोबल वार्मिंग' कहते हैं, उसका कारण वनों के प्रति हमारी यह विनाशकारी प्रवृत्ति ही है। आज हम अपनी इसी प्रवृत्ति के भयंकर दुष्परिणाम भोग रहे हैं।

यह अच्छी बात है कि अब हमें अपनी इस भूल का ज्ञान हो गया है। इसी कारण से वृक्षारोपण के प्रति जागृति आई है। जगह-जगह वृक्षारोपण कार्यक्रम हो रहे हैं। देश की पंचायतें और नगरपालिकाएँ 'वृक्ष लगाओ, देश बचाओ ' का नारा देकर वृक्षारोपण का अभियान चला रही हैं। मुंबई महानगपालिका ने भी 'स्वच्छ मुंबई, हरित मुंबई ' की मुहिम चलाई है। लगभग सारे देश में वृक्ष लगाने की प्रवृत्ति ने जोर पकड़ रखा है।

लोग अब समझ गए हैं कि वृक्ष ही हमारे सच्चे मित्र हैं। वे सिर्फ हमें फूल, फल, छाया और लकड़ी ही नहीं देते, बल्कि हमारे उस पर्यावरण को भी शुध्द करते हैं जिसमें हम साँस लेकर जीवित रहते हैं। इसके साथ ही हरे - भरे और सघन वनों के कारण अच्छी वर्षा भी होती है। इस प्रकार शुध्द वायु, जल और अन्न ये तीनों ही वृक्षों की विपुलता से ही सुलभ होते हैं। इसीलिए आज 'वृक्ष लगाओ, देश बचाओ' का नारा सर्वत्र अपना रंग जमा रहा हैं ?

*** BEST OF LUCK ***